1. नामदेव

हमारे देश में संतों की एक महान परंपरा रही है। कबीर के पूर्ववर्ती संतो में नामदेव का नाम हिंदी साहित्य के इतिहास में सबसे अधिक प्रसिद्ध है। तत्कालीन संतों में से महाराष्ट्र के वारकरी संप्रदाय के अग्रणी कवि तथा विट्ठल के परम भक्त संत नामदेव का जन्म हिंगोली जिले के नरसी बामनी गाँव में सन 1270 ई.में हुआ और देहावसान सन 1350 में तीर्थक्षेत्र पंढरपुर में हुआ। नामदेव के दादा का नाम नरहरी शेटी, पिता का नाम दामा शेटी और माता का नाम गोनाबाई था। वे जाति से दर्जी थे और उन्होंने स्वयं को छिपी (शिंपी) कहा है। इससे स्पष्ट होता है कि उनके परिवार में कपड़ों की सिलाई और छपाई का व्यवसाय चलता था। बचपन से ही नामदेव विट्ठल–भक्ति में लीन रहते थे, उसी समय उनका विवाह गोविंद शेटी सदावर्ते की बेटी रजाई के साथ हुआ जिनसे उन्हें चार बेटे और एक बेटी हुई।

संत नामदेव का मन अपनी घर–गृहस्ती में नहीं लगा, तब वे पंढरपुर जाकर विट्ठल की सेवा करने लगे। पंढरपुर में ही उनकी मुलाकात संत ज्ञानेश्वर और उनके भाई–बहनों से हुई। उनकी प्रेरणा से उन्होंने विसोबा खेचर से गुरु दीक्षा ली थी। अपनी गुरु–भक्ति के बारे में उन्होंने स्वयं कहा था कि,

तनो मेरी सुई मनो मेरा धागा,
खेचर जी के चरणों में नामा सिंपी लागा।

गुरु से दीक्षा लेने के बाद संत नामदेव ने संत ज्ञानेश्वर के साथ उत्तर भारत का भ्रमण करते हुए काशी, गया,, अयोध्या, हरिद्वार, पंजाब, गुरदासपुर, जालंधर, हिसार, मथुरा आदि स्थानों की तीर्थ यात्राएँ भी की थी, जहाँ आज भी इनके अनुयाई मिलते हैं। उन्होंने अपने जीवन के अंतिम बीस वर्ष पंजाब के गुरदासपुर जिले के घुमान नामक स्थान पर बिताए थे, जहाँ आज भी बाबा नामदेव जी नामक गुरुद्वारा है। कहा जाता है कि दिल्ली के बादशाह आलम उर्फ अलाउद्दीन ने भी घुमान जाकर संत नामदेव की भेंट की थी। संत नामदेव को हिंदी साहित्य के इतिहास के अंतर्गत भक्ति–काल के कवि के रूप में जाना जाता है। उन्होंने निर्गुण और सगुण ईश्वर–भक्ति के पदों की रचना की है। उनके पदों में ज्ञान और भक्ति का मणिकांचन संयोग दिखाई देता है।

मूलतः संत नामदेव एक मानवतावादी विचारों को लेकर चलनेवाले संत थे। इसी कारण उनके पदों में ईश्वर की भक्ति, गुरु का महत्व, संतों की संगति,

गुण–कथन, बोधात्मकता, आत्मनिवेदन तथा राष्ट्रीय एकात्मता की अभिव्यक्ति हुई है। उनके अनुसार ईश्वर इस सृष्टि के घट–घट में व्याप्त है। अतः उनकी भक्ति सच्चे मन से करनी चाहिए। उच्च वर्णियोंद्वारा नामदेव को प्रताड़ित करने के बावजूद भी वे सच्चे हृदय से विट्ठल की भक्ति करते रहे। उनकी सच्ची भक्ति–भावना के बारे में कहा गया है कि,

"टाल बिना लेकर नामा राऊल में गाया।
पूजा करते ब्राह्मण उनैन बाहर ढकाया।।
देवल के पीछे नामा अल्लक पुकारे।
जिदर जिदर नामा उदर देऊल ही फिरे।।"

नामदेव के अनुसार विट्ठल की भक्ति में पाखंड और बाह्याडंबरों के लिए कोई स्थान नहीं है। नामदेव के पद समाज में फैली विषमता एवं धर्म में चल रहे बाह्याडम्बरों पर प्रहार कर समाज में समता एवं मानवता स्थापित करने की क्षमता रखते हैं। इसीलिए आज के संदर्भ में समाज की विविध समस्याओं से छुटकारा पाने के लिए संत नामदेव के विचार हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं, प्रासंगिक हैं।

रचनाएँ– संत नामदेव ने विट्ठल को अपना आराध्य मानकर उनके प्रति अपने भक्ति–भाव को पदों के माध्यम से अभिव्यक्त किया है। संत नामदेव की रचनाएँ मराठी और हिंदी दोनों भाषाओं में पाई जाती है। नामदेव की रचना 'नामदेव गाथा' में ढाई हजार मराठी अभंग संकलित हैं। उनके हिंदी पदों की संख्या 230 बताई जाती है। साथ ही साथ सिखों का प्रसिद्ध धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में 61 पद संकलित हैं और 'सकल संत गाथा' में इनके 102 हिंदुस्तानी भाषा के पद पाए जाते हैं। हिंदी का ब्रज और खड़ीबोली का मिश्रित रूप इनके पदों में मिलता है। एक आध पद में फारसी भाषा का प्रयोग भी पाया जाता है।

नामदेव ने पंढरपुर के विट्ठल को अपना आराध्य मानकर उनके प्रति अपनी भक्ति–भावना को व्यक्त किया है। उनके अनुसार भक्तों को अपने सच्चे हृदय से ईश्वर की भक्ति करनी चाहिए। वे सबसे पहले **नामस्मरण की महत्ता** पर बल देते हुए कहते हैं कि ईश्वर का (विठ्ठल) नाम स्मरण हीरे की तरह मूल्यवान है, क्योंकि उनका नाम लेते ही संसार कि हमारी समस्त पीड़ाएँ नष्ट हो जाती है। हरि का नाम जाति–पाँति के परे है। अतः धर्म, जाति, संप्रदाय से हटकर हरि का नाम लेने से हमारे संपूर्ण जीवन में एक सकारात्मक, विकासात्मक परिवर्तनरुपी क्रांति आ जाती है। इसीलिए संत नामदेव कहते हैं कि हमारे जीवन में समस्त सुखों की राशि हरि का नाम मात्र है। हरि का नाम लेने से हम यम का (मृत्यु का) पासा काट सकते हैं। अर्थात हम जन्म मृत्यु के चक्कर से मुक्त हो जाते हैं। हरि अर्थात विट्ठल का नाम ही समस्त संसार का सार है। नामदेव कहते कि उनका नाम स्मरण करने से हमारे जीवन के समस्त दोष दूर हो जाते हैं।

संत नामदेव ईश्वर की भक्ति को प्राप्त करने के लिए ज्ञान को महत्वपूर्ण मानते हैं। इसीलिए उन्होंने अपने जीवन में ज्ञान प्राप्ति के लिए **गुरु की महत्ता** को समझना आवश्यक माना है। गुरु की महत्ता बताते हुए वे कहते हैं कि गुरु ने ही मेरे जन्म को सफल बनाया है। मेरे विविध दुखों को भूलाकर उन्होंने ही मुझे अपने पास लिया और अपना ज्ञान रुपी अंजन मेरी आँखों में डालकर मेरी आँखों से अज्ञान की पट्टी को हटा दिया है अर्थात् मेरी आंखें खोल दी। परिणाम स्वरूप अब मुझे राम नाम के बिना मेरा जीवन हीन लगने लगता है। इसीलिए वे कहते हैं कि ईश्वर का नाम स्मरण करने से मनुष्य को समस्त संसार का जीवन शिव के समान लगता है।

नामदेव के अनुसार संतों की संगति से हमें ईश्वर की भक्ति सहजता से प्राप्त होती है। इसीलिए उन्होंने **सत्संगति की महत्ता** को स्वीकारने की बात कही है। संत ही हमें ईश्वर की ओर जाने का रास्ता बताते हैं और सांसारिक माया–मोह से बचने का उपदेश भी देते हैं। नामदेव यहाँ सांसारिक आकर्षण तथा मोह को माया का जाल मानते हुए उससे बचने के लिए साधक अर्थात मनुष्य को कहते हैं कि, हे मनुष्य (मन) तू एक पंछी की तरह इस संसार रूपी मायाजाल के पिंजरे में मत पड़। अपने इस शरीर रूपी यौवन पर गर्व मत कर क्योंकि वह मृत्यु के बाद एक तिनके के समान जलकर नष्ट होने वाला है। यह जीवन एक कांच के घड़े की तरह है, जिसमें पानी कभी भी सुरक्षित नहीं रह सकता क्योंकि उसके टूटने से पानी बाहर फैलकर पंच तत्वों में मिल जाता है, नष्ट हो जाता है। ठीक उसी तरह आत्मा के बिना तेरा यह शरीर भी नश्वर है। इसीलिए नामदेव कहते हैं कि, है साधक तू मेरी बात ध्यान से सुन और संतों की संगति धारण कर, जिससे तेरा जीवन सफल हो जाए।

नामस्मरण की महत्ता

हरि नांव हीरा हरि नांव हीरा।
हरि नांव लेत मिटै सब पीरा।।1।।
हरि नांव जाति हरि नांव पांति।
हरि नांव सकल जीवन मैं क्रांति।।2।।
हरि नांव सकल सुषम की रासी।
हरि नांव काटै जम की पासी।।3।।
हरि नांव सकल भुवन ततसारा।
हरि नांव नामदेव उतरै पारा।।4।।

गुरु की महत्ता

सफल जनमु मो कउ गुर कीना।
दुख बिसारि सुख अंतरि लीना।।1।।
गिआन अंजनु मो कउ गुरि दीना ।
रामनाम बिनु जीवनु मन हीना।।2।।
नामदेइ सिमरन करि जानां।
जग जीवन सिउ जीउ समानां।।3।।

सत्संगति की महत्ता

मन पंछीया मत पड़ पिंजरे।
संसार मायाजाल रे।।1।।
तन जोवन रूप कारण।
न कर गर्व गव्हार रे।।2।।
एक दिनमो तिन विरिया।
सदा झमकत काल रे।।3।।
कुम्भ काच्या निर भरिया।
बिनसत नहिं वार रे।।4।।
कहत नामदेव सुन भई साधु।
साधु संगत धरना रे।।5।।

■■■